नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

विकास बिना रोजगार पैदा नहीं होंगे

भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में मौद्रिक नीति जारी करते हुए रेपो और रिवर्स रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं किया है. इसी के साथ भारतीय रिजर्व बैंक ने देश की आर्थिक स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है. इसके अनुसार आने वाले समय में भारत के विकास दर सात फ़ीसदी के आसपास स्थिर रहेगी. कुल मिलाकर देश की आर्थिक सेहत संतोषजनक है लेकिन बेरोजगारी की समस्या बनी हुई है .विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक 1991 में भारत और चीन में कृषि में रोजगार का प्रतिशत आसपास ही था. चीन में यह 60 प्रतिशत तथा भारत में 63 प्रतिशत था, किंतु विश्व बैंक के अनुसार करीब 30 साल बाद चीन में यह तेजी से कम होकर 23 प्रतिशत रह गया, जो भारत के 44 प्रतिशत आंकड़े से बहुत कम है. इन 30 साल के भीतर चीन में लगभग 20 करोड़ कृषि श्रमिक उद्योग और सेवा क्षेत्रों में चले गए. विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक भारत में भी काफी संख्या में श्रमिक खेती से बाहर चले गए मगर इसी दौरान कृषि में रोजगार पाने वालों की संख्या 3 .5 करोड़ बढ़ गई.

भारत को मौजूदा निम्न-मध्यम आय स्तर से उच्च आय स्तर या उच्च मध्यम आय स्तर तक लाने के लिए जरूरी बदलाव पर भी सबका ध्यान केंद्रित है .यह बदलाव रोजगार के ढांचे में होना है, जिसके तहत कृषि क्षेत्र से जुड़ा रोजगार घटना चाहिए और उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का रोजगार उतना ही बढ़ना चाहिए. कृषि रोजगार के प्रतिशत की बात करें तो आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) देशों में यह लगभग 5 प्रतिशत है जो भारत में कृषि में वर्तमान रोजगार के प्रतिशत का लगभग आठवां हिस्सा है. उच्च-मध्यम आमदनी वाले देशों में भी कृषि में रोजगार की हिस्सेदारी आज भारत की तुलना में केवल आधी है. जहां 1991 में रोजगार में कृषि की हिस्सेदारी 75 प्रतिशत थी मगर 2021 में घटकर 29 फीसदी रह गई. इसका बड़ा कारण यह है कि चीन और वियतनाम में इन वर्षों के दौरान अधिक निर्भरता विनिर्माण में रोजगार सृजन और निर्यात बढ़ाने वाली वृद्धि पर रही है .भारत के मामले में 1991 और 2021 के आंकड़ों की तुलना में एक अहम बिंदु छिप जाता है. कृषि की हिस्सेदारी में गिरावट और उद्योग तथा सेवाओं में वृद्धि मुख्य रूप से 1990-91 से 2014-15 के बीच यानी 25 वर्षों दौरान हुई .उसके बाद से विनिर्माण में वृद्धि की कई योजनाएं आने के बाद भी कोई बड़ा बदलाव नहीं देखा गया है .संभवतः कोविड के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की वापसी की वजह से भी कृषि क्षेत्र से रोजगार स्थानांतरित होने की रफ्तार धीमी रही है .भारत में राज्यों के बीच अंतर पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए.

अहम मुद्दा यह है कि हम किस दर पर उद्योग और सेवा क्षेत्र में बेहतर रोजगार सृजन कर सकते हैं ताकि कामकाजी उम्र वाले लोगों की बढ़ती संख्या और कृषि क्षेत्र से आने वाले लोगों को इसमें खप सके. 2047 तक कामकाजी उम्र वाली आबादी (15 से 59 वर्ष) का आधिकारिक पूर्वानुमान लगाएं और मान लें कि काम ढूंढने वालों में करीब 65 प्रतिशत हिस्सेदारी इसी समूह की होगी तो हमारे पास रोजगार ढूंढने वाले करीब 12 करोड़ नए लोग होंगे. इसके अलावा सबसे मुश्किल पूर्वानुमान कृषि क्षेत्र से निकलने वाले श्रम बल के दूसरे क्षेत्रों में स्थानांतरण के मूल्यांकन का स्तर है. अगर हम विकसित या उच्च आमदनी वाला देश बनना चाहते हैं तब कृषि क्षेत्र में रोजगार का हिस्सा कम होकर 10 प्रतिशत के स्तर पर आना चाहिए. इसका मतलब है कि लगभग 15 करोड़ लोगों को कृषि क्षेत्र छोड़ना होगा .इस तरह उद्योग और सेवा क्षेत्रों में 27 करोड़ से अधिक नए रोजगार पैदा करने की आवश्यकता है ताकि रोजगार ढूंढने वाली आबादी और कृषि क्षेत्र छोड़ने वाली अतिरिक्त आबादी इसमें खप सके .अगले 25 वर्षों में यह तादाद सालाना 1 करोड़ से अधिक नई उद्योग एवं सेवा क्षेत्र की नौकरियां हैं. असली चुनौती यह है कि हमें 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए एक ऐसी योजना चाहिए जो उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार के बेहतर मौके तैयार करे, खासतौर से उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में, जहां आज भी औसतन करीब 55 प्रतिशत लोग खेती में रोजगार पाते हैं. अगले 25 साल में देश में जितने भी नए कामगार बढ़ेंगे, उनमें से लगभग 90 प्रतिशत इन पांच राज्यों से होंगे.

वाकई खलक का हलक बंद करना बहुत ही मुश्किल

देश हित पर अंतरराष्ट्रीय मामलों को लेकर ही सहमति बन सकती है?

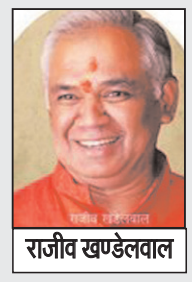
राजीव खण्डेलवाल

पुनः महत्वपूर्ण समय का अपव्यय ही अपव्यय- गत दिवस ही मैंने देश के 'अमूल्य' समय के 'अपव्यय' के बाबत कांवड़ यात्रा में नेम प्लेट को लेकर दो भागों में लिखे लेख के माध्यम से लंबी चर्चा की थी. परंतु दुर्भाग्य वश ऐसा लगता है कि देश में बुद्धि का अकाल होकर वह काल के गाल में चली गई है. तभी तो बदकिस्मत, विनेश फोगाट की अयोग्यता को लेकर आरोपों (तथाकथित) की पोटली बनाकर देशव्यापी चर्चा में व्यस्त हो कर पुनः समय की बर्बादी की जा रही है. आखिर यह कब और कहां जाकर रुकेगी ? वाकई खलक का हलक बंद करना बहुत ही मुश्किल है.

असंभव को संभव कर अयोग्य होकर भी फोगाट ने देश का नाम ऊंचा कर स्वयं को योग्य सिद्ध किया- ताजा मामला कई अवॉर्डों से सुशोभित तथा खेल पुरस्कार व अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित देश की प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पहलवान विनेश फोगाट का है. पेरिस में चल रहे ओलंपिक में वर्ष 2010 से लगातार 95 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले जीत चुकी 4 बार की विश्व कुश्ती चैंपियन तथा पिछले ओलंपिक विजेता जापान की अपराजित युई सुसाकी को 50 किलो वजन वर्ग की कुश्ती में प्री क्वार्टर फाइनल में हराकर इतिहास रच कर गोल्ड मेडल चूकने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत देश का नाम गौरवान्वित कर ऊंचा किया. ग्रहण तो चांद को भी लगता है सो यह आईने सामान स्पष्ट है कि देश की हीरोइन आईकॉन बन चुकी विनेश फोगाट के 50 किलोग्राम की श्रेणी में 100 ग्राम वजन ज्यादा रह जाने के कारण कुश्ती के ओलंपिक नियमों के तहत उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया, जिस कारण से वे गोल्ड-सिल्वर मेडल के लिए फाइनल में मैट पर उतर नहीं सकी. लेकिन एक स्वर में कह रहा है सारा देश, तुम हारी नहीं विनेश. इस प्रकार जो जीता वही सिकंदर मिथक को विनेश ने झुठला दिया. जीत ही नहीं हार भी जीत कहलाती है, इसीलिए तो हार गले में ड़ाली जाती है.

कुश्ती से संन्यास की घोषणा. गहरा अवसाद तो कारण नहीं?- गोल्ड मेडल जो किसी भी खिलाड़ी के जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न होता है, के निकटतम लगभग पहुँच जाने के बावजूद, अयोग्य घोषित होने के चलते लगभग आई सफलता हाथ से फिसल जाती है, तब उस खिलाड़ी की मानसिक स्थिति की कल्पना करना किसी अन्य व्यक्ति के लिए लगभग असंभव सी हो जाती है. सच कहा है, घाव से बड़ी घाव की टीस होती है. तब ऐसे खिलाड़ी के टूटे हुए मनोबल (जमीन पर लेटी हुई उसकी फोटो को देखिये) को ऊंचा उठानें के लिए दवाई के रूप में सांत्वना के कुछ अच्छे शब्दों की आवश्यकता की बेहद जरूरत होती है, जैसा कि प्रधानमंत्री ने अयोग्य घोषित होने के तुरंत बाद सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर किया आप चैंपियन में चौंपियन है. आप भारत का गौरव हैं. मैं जानता हूं कि आप दृढ़ता का प्रतीक हैं. चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना हमेशा से आपका स्वभाव रहा है.

मजबूत होकर वापसी आइये. इससे अच्छा उत्साह वर्धन करने वाला कोई शब्द-लाइन हो ही नहीं सकती. यद्यपि विनेश की जीत पर प्रधानमंत्री का ट्वीट न आना या फोन पर बातचीत न करना जैसे अन्य खिलाड़ियों के साथ किया पर प्रधानमंत्री की आलोचना के शिकार भी बने.

तथ्यहीन, आधारहीन आरोप?

परंतु दुर्भाग्य मेरे देश का, एक वर्ग को, कुछ राजनीतिक पार्टियों और सोशल मीडिया को इसमें षडयंत्र की बू नजर आ रही है, जिस पर देश में फिर अनावश्यक बहस चलवाकर महत्वपूर्ण समय को फालतू बना दिया जा रहा है. प्रथम आरोपों की बात कर ले ;प्रमुख पत्रकार अशोक वानखेडे ने उनके खाने में एंटी कार्नजिक दवाई दी गई जिसके कारण वर्क आउट के बाद भी पसीना जिससे वजन कम होता है, नहीं निकलता है. ऐसा आधारहीन आरोप लगाया है. भारतीय कुश्ती संघ व ओलंपिक संघ की नीयत पर सवाल उठाने जा रहा है. भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष संजय सिंह ने भी सपोर्ट स्टाफ की भूमिका पर उंगली उठाते हुए जांच की मांग की है. आप सांसद संजय सिंह का बयान कि यह विनेश का नहीं देश का अपमान है भारत सरकार हस्तक्षेप करे और बात न मानी जाए तो ओंलपिक का बहिष्कार करे. पूर्व सांसद डॉ. एस टी हसन के कथनानुसार यदि पूरे बाल कटवा दिए जाते तो 200 ग्राम वजन कम हो जाता? डॉ. एस टी हसन को यह जान लेना चाहिए कि न केवल उनके कुछ बाल काटे गये बल्कि नाखून भी काटे गए थे तथा कपड़े भी छोटे किए गए जैसा भारतीय दल के चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉ दिनशॉ पारदीवाला ने बतलाया.

मनरेगा में महिलाएं | आत्मनिर्भर बनाने का सार्थक प्रयास

ओजस्कर पाण्डेय

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के पोर्टल पर उपलब्ध डेटा से पता चलता है कि 2023-24 के दौरान 26 दिसंबर तक राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत लगभग 238.62 करोड़ व्यक्ति-दिवस हैं, महिला व्यक्ति-दिवस का आंकड़ा लगभग 141.37 करोड़ या 59.24% है. आधिकारिक आंकड़ें बता रहे हैं कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना में महिलाओं की भागीदारी पिछले 10 वित्तीय वर्षों की तुलना में सबसे उच्च स्तर पर पहुंच गई है.

चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान 26 दिसंबर तक कुल मानव-दिवस में महिला दिवसों का अनुपात 59.24% तक पहुंच गया है. इस आंकड़े को अगर हम महिलाओं की भागीदारी के तौर पर देखें तो यह लगतार बढ़ता हुआ प्रतीत होगा. क्योंकि 2022-23 में मनरेगा में महिलाओं की भागीदारी की दर 57.47% और 2021-22 में 54.82% थी. कोविड-19 महामारी के दौर यानी 2020-21 के दौरान यह आंकड़ा 53.19% था और प्री-कोविड अवधि यानी 2019-20 के दौरान यह 54.78ब था. आधिकारिक आंकड़ें बताते हैं कि 2022-23 में कुल 295.66 करोड़ में से महिलाओं की संख्या 169.90 करोड़ (57.47%) थी. पिछले 10 वित्तीय वर्षों में एनआरईजीएस में महिला व्यक्ति-दिवस के कुल ब आंकड़े की बात करें तो 2014-15 में 54.88%, 2015-16 में 55.26%, 2016-17 में 56.16%, 2017-18 में 53.53, 2018-19 में 54.59, 2019-20 में 54.78%, 2020-21 में 53.19%, 2021-22 में % 2022-23 में 57.47% और 2023-24 में अब तक 59.24ब है. सबसे कम प्रतिशत की बात करें तो वह 2020-21 में 53.19% दर्ज किया गया था. पिछले सभी वित्तीय वर्षों के आंकड़ें ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना में महिलाओं की भागीदारी में लगातार वृद्धि का संकेत दे रहे हैं.

> महिला सशक्तीकरण भूमिका निभाने वाली दो सरकारी योजनाओं महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना और प्रधानमंत्री जनधन योजना में सकारात्मक सहसंबंध है. एक रिपोर्ट के मुताबिक जिन राज्यों में मनरेगा में महिलाओं की भागीदारी कम है, वहां महिलाएं पीएमजेडीवाई से कम लाभान्वित हैं. अभी पीएमजेडीवाई से करीब 55 फीसदी महिलाएं लाभान्वित हैं. हालांकि मनरेगा में महिलाओं की राष्ट्रीय भागीदारी 57 .4 फीसदी थी. रिपोर्ट के अनुसार ज्यादातर बड़े राज्यों में मनरेगा में महिलाओं की भागीदारी 33 फीसदी से अधिक है जबकि कुछ राज्यों में राष्ट्रीय औसत से कम है. अन्य सरकारी आंकड़ों के अनुसार मनरेगा में महिलाओं की भागादारी वाले शीर्ष राज्यों केरल (89 .82 प्रतिशत), पुदुच्चेरी (87 .48 प्रतिशत), तमिलनाडु (86 .41 प्रतिशत), गोवा (78 .4 प्रतिशत), राजस्थान (68 .17 प्रतिशत) और पंजाब (66 .55 प्रतिशत) हैं.

पिछले कुछ वर्षों में मनरेगा में केरल (89%), तमिलनाडु (86%), पुडुचेरी (87.16%) और गोवा (72%) जैसे दक्षिणी राज्यों में महिलाओं की भागीदारी दर 70ब से अधिक दर्ज की गई है, वहीं उत्तरी राज्यों में यह लगभग 40ब या उससे नीचे रही है. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा 9 अक्टूबर 2023 को जारी रिपोर्ट दर्शाती है कि देश में महिला श्रम बल भागीदारी में उल?लेखनीय सुधार हुआ और यह दर 2023 में बढ़कर 37.0 प्रतिशत हो गई जो 2021-22 में 32.8 प्रतिशत थी. ग्राम्य विकास विभाग के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनाने बहुत गम्भीर व सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की आमदनी में इजाफा करने के बहुआयामी प्रयास किये जा रहे हैं. मनरेगा के तहत अधिक से अधिक महिलाओं को काम देने का प्रयास किया जा रहा है.

उत्तर प्रदेश में 2023-24 में अब तक मनरेगा योजना के तहत कुल 31.15 करोड़ मानव दिवस सृजित हुए, जिनमें से 13.16 करोड़ महिलाएं हैं. महिला मेट मनरेगा में प्रबंधन और पर्यवेक्षण के लिए महिला श्रमिकों के लिए सहायक सिद्ध हो रही हैं. ग्राम्य विकास विभाग की योजनाओं में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी हो रही है. मनरेगा योजना में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी तेजी के साथ आगे बढ़ी है. ग्रामीण महिलाओं की आजीविका संवर्धन से महिलाएं स्वावलंबी बन रही हैं. उत्तर प्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी (मनरेगा) के तहत महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है. ग्रामीण रोजगार योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी 2019-20 और 2020-21 में 34 प्रतिशत रही, वर्ष 2021-22 में 37 प्रतिशत रही, वर्ष 2022-23 में 38 प्रतिशत रही और वर्ष 2023-24 में माह अब तक बढ़कर औसतन 42 प्रतिशत हो गई है, जो अब तक का महिलाओं की मनरेगा में भागीदारी में सबसे अधिक है. बीते वर्षों से महिला लाभार्थियों की संख्या बढ़ाने में प्रदेश तेजी से जुटा है.

लॉजिस्टिक नीति से मिलेंगी नौकरियां

महाराष्ट्र में अनेक वर्षों से सरकारी नौकरियों में भर्ती बंद है. कितने ही पद खाली पड़े हैं. कुछ पदों को समाप्त भी कर दिया गया है. ऐसी स्थिति में राज्य मंत्रिमंडल का लॉजिस्टिक नीति द्वारा 5,00,000 नौकरियां देने का निर्णय बेरोजगार युवाओं की उम्मीद जगानेवाला है. इस नीति से आगामी 5 वर्षों में सरकार को 30,000 करोड़ रुपए का राजस्व भी मिलने की आशा है. इस नीति के तहत नई मुंबई में अंतरराष्ट्रीय रसद केंद्र (इंटरनेशनल लॉजिस्टिक पार्क) स्थापित किया जाएगा. इसके अलावा राज्य की 10,000 एकड़ जमीन पर प्रादेशिक रसद केंद्र शुरू किए जाएंगे. समृद्धि महामार्ग से जुड़ी हुई 1500 एकड़ जमीन पर नागपुर वर्धा राष्ट्रीय रसद केंद्र के लिए 1500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है. अमरावती-बड़नेरा, कोल्हापुर-इचलकरंजी, नाशिक-सिन्नर, धले-शिरपर में 300 एकड़ जमीन पर प्रादेशिक रसद केंद्र बनेंगे, इसी तरह छत्रपति संभाजीनगर-जालना, पुणे-भिवंडी, रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग, पुणे-पुरंदर, पालघर-वाढवण में 2500 करोड़ की लागत से 500 एकड़ जगह में राज्य रसद केंद्र बनाए जाएंगे. राज्य आर्थिक सलाहकार परिषद की सिफारिश के अनुसार उद्योग विभाग ने

महाराष्ट्र के विकास के लिए 10 वर्षों की नीति तैयार की है. इसमें महाराष्ट्र मेरिटाइम बोर्ड, जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट, राज्य सड़क विकास महामंडल, मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरण, सिडको, महाराष्ट्र विमानतल विकास कंपनी का समावेश है. देश और राज्य में बढ़ती बेरोजगारी सभी के लिए चिंता का विषय है. अर्थव्यवस्था में प्रगति के साथ नौकरी अथवा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार बढ़ाना आवश्यक है. शिक्षा नीति भी ऐसी बनाई जाए जिसमें युवाओं को हुनर सीखने का मौका मिले. इसमें उद्योगों की जरूरतों का ध्यान रखा जाए,

निशानेबाज

स्टील में टाटा, जूतों में बाटा आटा महंगा, सस्ता है डाटा

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, खबर है कि महंगाई के चलते गरीब की थाली भी अब 32 रुपए से ज्यादा में आ रही है जबकि एक दिन में 2 जीबी इंटरनेट डाटा 13 रुपए से भी कम में मिल रहा है. इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

हमने कहा, खाने की थाली में आटे से बनी रोटी होती है और आटे का महत्व हमेशा से रहता आया है. लोग किसी मोटे- ताजे व्यक्ति से पूछते हैं- आखिर किस चक्की का आटा खाते हो भाई? आटा मोटा या बारीक पीसा जाता है. किसी को धमकी देते हुए कहा जाता है- मुझसे पंगा मत लेना, आटे-दाल का भाव याद दिला दूंगा. बोलचाल में कोई भी कहता है- आटा पिसाने जा रहा हूं. यह वाक्य तथ्यात्मक दृष्टि से गलत है. आटा तो पहले ही पिसा-पिसाया रहता है, उसे फिर से थोड़े ही पीसा जाएगा! इसलिए कहना चाहिए कि गेहूं, ज्वार, मक्का, बाजरा, चना पिसवाने चक्की जा रहा हूं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हम बचपन में 2 पैसा सेर के हिसाब से आटा पिसवाते थे लेकिन अब 1 किलो

पिसवाने के 6 रुपए देने पड़ते है. बिजली महंगी हो गई है. चक्की चलानेवाले नौकर की तनख्वाह भी बढ़ गई है. देश की तरक्की के साथ रुपए का वैल्यू भी कम हो गया है. लोग गरीबी में आटा गीला होने की शिकायत करते हैं. कहते हैं कि जब द्रोणाचार्य गरीब थे तो उनकी पत्नी अपने बेटे अश्वत्थामा के दूध मांगने पर उसे पानी में आटा घोलकर पिला दिया करती थी.

हमने कहा, खबर यह भी है कि विभिन्न कंपनियों का जो रेडीमेड आटा लोग खरीदकर लाते हैं, वह हानिकारक होता है, उसमें प्रिजर्वेटिव मिलाए जाते हैं. इसकी बजाय गेहूं को चक्की पर ले जाकर पिसवाना और ताजा आटा इस्तेमाल करना हमेशा अच्छा होता है. जब बिजली उपलब्ध नहीं थी तो महिलाएं घर में पत्थर की चक्की पर आटा पीसा करती थीं. इससे उनकी एक्सरसाइज हो जाती थी. तब कुएं से पानी खींचना, सिल पर मसाला पीसना, उखली में कूटना, मथानी से दही को बिलोना ऐसे व्यायाम थे जिनसे स्वास्थ्य अच्छा रहता था. इस चर्चा को यह कहकर समाप्त करेंगे कि स्टील में टाटा, जूतों में बाटा, आटा महंगा, सस्ता है डाटा !

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11632 - डॉ. सागर खादीवाला

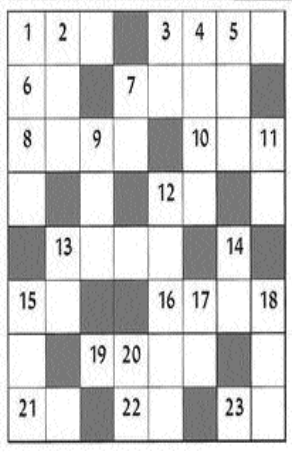

बायें से दायें
1. सिर के अंदर का गूदा या भेजा, समझ, बुद्धि (उर्दू) 3. लड़कपन, बचपन 6. बुरी आदत (उर्दू) 7. अधीनस्थ कर्मचारी (उर्दू) 8. चमकने वाला, चमकदार 10. जंगल, घर (सं.) 12. पहनावा, वस्त्र, वेशविन्यास 13. सीमा (उर्दू) 15. अभ्यस्त, जिसे किसी चीज की लत लग गयी हो (उर्दू) 16. राक्षसी 19. वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो (सं.) 21. डोरी, सूत आदि को बटकर बनाई हुई रस्सी 22. रक्षा, बचाव (सं.) 23. लम्बा तथा नुकीला कांटा (सं.)

ऊपर से नीचे
1. मनोरंजक (उर्दू) 2. मृतक का शोक (उर्दू) 3. कथन, वचन, वार्तालाप 4. झोंका खिलाना, लपकाना, आगे बढ़ाना, आग दहकाना 5. गिरना, अधोगति, अवनति 7. फूलों का हार, लड़ी 9. बबूल नामक वृक्ष 11. मानचित्र, भवन आदि का रेखा चित्र (उर्दू) 12. वेदव्यास का एक नाम (सं.) 13. शताब्दी, सैकड़ा (उर्दू) 14. तलवार (सं.) 15. आकृति, स्वरूप, डीलडौल 17. बहुत छोटा टुकड़ा, रवा 18. ऊंट बैल आदि के नाम में बंधी हुई रस्सी 20. परिमाण, मिकदार, बारहखड़ी लिखते समय वह स्वर-चिन्ह या रेखा जो शब्दों के ऊपर या आगे पीछे लगाई जाती है

Solution 11631

आ	कुं	च	न		नि	शा	ना
ल		क	म	ला		इ	ति
सी	ख		न	ख	लि	स्ता	न
	दा	म		बा	प		
अ	न	हि	त		ट	ख	ना
मा			नि		ना		ड़ी
न		ता	क	त		मौ	
त	ब	ला		क	बू	त	र

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. व्यवसाय में वृद्धि होगी. राजनैतिक लाभ होगा. वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा. आय के अन्य स्त्रातों में वृद्धि होगी. पूर्व परिचित से भेंट होगी. सफलता मिलेगी. मन में प्रसन्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है. स्थान परिवर्तन का योग है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. शुभ समाचार मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम व उदासीनता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आपसी सामंजस्य के साथ काम लेना हितकर रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना चाहिये. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को जमीन जायजाद के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वान होगा, इनके कार्य एक से अधिक होते हैं, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, यात्राप्रिय एवं लेखनादि में अधिक रूचि रखने वाला होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

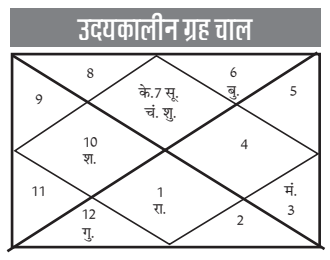

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2081 श्रावण शुक्ल षष्ठी शनिवासरे रात 1/55, चित्रा नक्षत्रे रात 3/30, साध्य योगे दिन 2/2, कौलव करणे सू.उ. 5/30 सू.अ. 6/30, चन्द्रचार कन्या दिन 2/15 से तुला, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक-8,0,5.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल षष्ठी को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, तिलहन, तेल, अलसी, सरसों में अच्छी मंदी होगी, रूई, चांदी के भाव में तेजी का योग है. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 1925 है.

मेष- मनमौजी रवैया नुकसानदायी हो सकता है, परिचितों से नुकसान हो सकता है, शारीरिक अस्वस्थ्यता एवं मानसिक पीड़ा हो सकती है. सुख साधनों में वृद्धि होगी.

वृषभ- कार्यक्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, सुविधा के अभाव से परेशानी होगी, पारिवारिक क्लेश एवं विवाद से दूर रहें. अनावश्यक तनाव से बचें.

मिथुन- भौतिक सुख सुविधा पर बड़े खर्च की संभावना है, अपनी ताकत व पहुंच का सही लाभ लेने में नाकाम रहेंगे, न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी.

कर्क- विपरीत हालात में समझौता करना लाभकारी हैं, लेखन अध्ययन, एवं नवीन कार्यों की योजनाओं पर विचार होगा, जवाबदारी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

सिंह- व्यर्थ की कार्यों में समय बीतेगा, पुराने विवाद के समाधान के आसार हैं, भूमि वाहनादि के कार्यों में सावधानी रखें, परीक्षा प्रतियोगिता के परिणाम उत्तम रहेंगें.

कन्या- लेन देन के मामले आपका पक्ष मजबूत होगा, कर्जदारी से छुटकारा मिल सकता है, इच्छानुसार सफलता प्राप्त होने का योग है. विवादास्पद कार्य सफ्ल होंगे.

तुला- जोखिम के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक मामलों में अपनों की मदद से लाभ होगा, मित्रों का सामान्य सुख मिलेगा, अधूरे कार्यों के पूर्ण होने का योग है.

वृश्चिक- अनुशासन की कमी से काम का बोझ बढ़ेगा, केरिअर में अच्छी प्रस्ताव मिलेंगे, शारीरिक श्रम एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी, अतिथि मेषमन हो सकता है.

धनु- कार्य विस्तार की संभावना बन सकती है, सामाजिक जीवन में आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे. दैनिक नियमितता का ध्यान रखें.

मकर- आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे, युवाओं के कैरिअर में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, स्थायी प्रयासों में लाभ होगा, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

कुम्भ- तयशुदा कार्यक्रम में बदलाव से खिन्नता बढ़ेगी, वैभव के सामान पर विशेष खर्च की संभावना है. आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी.

मीन- सहयोगी आपके व्यवहार से अपमाति महसूस कर सकते है, धार्मिक कार्यों में मानसिक संतोष बना रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, उत्साह एवं लगन रहेगी.

SUDOKU 6764

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 6763

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1